https://www.path-2-happiness.com/hi

वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं। (अल-बक़रा, 5)

ईशवर ने यह भी कहा। यही लोग हैं जिनपर उनके रब की विशेष कृपाएँ हैं और दयालुता भी, और यही लोग हैं जो सीधे मार्ग पर हैं। (अल-बक़रा, 157)

और ईशवर ने यह भी कहा। फिर यदि मेरी ओर से तुम्हें मार्गदर्शन पहुँचे, तो जिस किसी ने मेरे मार्गदर्शन का अनुपालन किया वह न तो पथभ्रष्ट होगा और न तक़लीफ़ में पड़ेगा। (ता-हा, 123)

मार्गदर्शन का मतलब पथभ्रष्ट से दूर रहना है। दयालुता का मतलब अप्रसन्नता से दूर रहना है। इसी बात को ईशवर ने सूरे ता-हा के प्रारंभ में बताया । हमने तुमपर यह ख़ुरआन इसलिए नही उतारा है कि तुम मशक़्क़त में पड़ जाओ। (ता-हा, 2)

मानव के लिए ख़ुरआन को अवतरित करने और उससे अप्रसन्नता को दूर करने की समस्या को एक साथ विवरण किया गया। जैसे ख़ुरआन के अनुयायियों के पक्ष में इसी सूरे के अंत में ईशवर ने यह कहा। वह न तो पथभ्रष्ट होगा और न तकलीफ़ में पड़ेगा । (ता-हा, 123)

मार्गदर्शन, अनुग्रह और दयालुता सहसंबन्धी है। जो एक दूसरे से अलग नही हो सकते। इसी प्रकार पथभ्रष्ट और अप्रसन्नता सहसंबन्धी है। जो एक दूसरे से बिदा नही हो सकते। ईशवर ने कहा। निस्संदेह अपराधी लोग गुमराही और दीवानेपन में पड़े हुए हैं। (अल-क़मर, 47)

सईर एक वचन है। इसका बहुवचन सुउर हैं। इसका माना अप्रसन्नता कि अंत वाला दण्ड है। अपराधी लोगों के विश्रामगृह के मुक़ाबले में ईशवर ने इसी सूरे में डर रखनेवालों के विश्रामगृह के प्रति यह कहा। निश्चय ही डर रखनेवाले बाग़ों और नहरों के बीच होंगे, प्रतिष्ठित स्थान पर, प्रभुत्वशाली सम्राट के निकट। (अल-क़मर, 54-55)

https://www.path-2-happiness.com/hi

यही प्रसन्नता का मार्ग है। अगर आप इस पर चलना हैं और इसका अनुयायी बनना चाहते हैं। यह मार्ग मिथक, आध्यात्मिक बिगाड़ या केवल विचार पर आधारित नही है। यह प्रसन्नता का मार्ग है। और यही ज्ञान और सभ्यता का मार्ग है।

मानवता को मुक्ती दिलाने वाला

न्याय कि बात यह है कि मुहम्मद को मानवता का मुक्ती दिलाने वाला कहा जाये। मेरा विशवास है कि मुहम्मद के समान कोई व्यक्ती इस आधुनिक संसार का शासन करले तो वह संसार के सारे आपद्धियों को खतम करदेगा और इसमें प्रसन्नता और शाँती पैदा करदेगा

बर्नार्ड शाह

ब्रिटीष लेखक